पाश्चात्य लोग जिन अंकों को अरबी कहते हैं, वे मूलतः भारतीय हैं. यह अंक विश्व को भारत ने दिए थे. वस्तुतः ‘शून्य’ भारत की विश्व को एक अमूल्य देन है. भारतीय प्राचीन काल से ही सौ करोड़ से आगे की गिनती जानते थे. “शिल्प संदर्शन परिवर्त” में बोधिसत्व ने इसका निरूपण किया है और इस गणना के द्वारा सुमेरू पर्वत का एक एक कण गिना जा सकता था. देखिए -

सौ करोड़	एक अयुत
सौ अयुत	एक नियुत
सौ नियुत	एक कंकर
सौ कंकर	एक विवर
सौ विवर	एक अक्षोभ्य
सौ अक्षोभ्य	एक विवाह
सौ विवाह	एक उत्सगं
सौ उत्सगं	एक बहुल
सौ बहुल	एक नागबल
सौ नागबल	एक तिटिलम्ब
सौ तिटिलम्ब	एक व्यवस्थान प्रज्ञप्ति
सौ ब्यवस्थान प्रज्ञप्ति	एक हेतुहिल
सौ हेतुहिल	एक करकु
सौ करकु	एक हेत्विन्द्रिय
सौ हेत्विन्द्रिय	एक समाप्तलम्भ
सौ समाप्तलम्भ	एक गण्नागति
सौ गण्नागति	एक निखद्य
सौ निखद्य	एक मुद्राबल
सौ मुद्राबल	एक सर्वबल
सौ सर्वबल	एक विसंज्ञागति
सौ विसज्ञांगति	एक विभूतंगमा

और प्रकृति भी एक ही है. सत्य एक है, जिसे महापुरूष केवल एक बार कह कर सिद्ध कर देते हैं. अनेक मिल कर एक होते हैं. महाप्रलय भी एक है व एक ही वस्तु - विद्या - परम् संतोष देने वाली है. एक मात्र अहिसां सुख देने वाली है. अकेले ही रास्ता नहीं चलना चाहिए और अकेले ही स्वादिष्ट भोजन नहीं करना चाहिए. बहुत से सोए लोगों में अकेले ही जागते नहीं रहना चाहिए. एक व्यक्ति के पाप के धन का उपभोग कई व्यक्ति करते हैं, परन्तु पाप का भागी वह अकेला होता है.

२

परमात्मा के दो - सगुण और निर्गुण - रूप हैं. सृष्टि में दो - स्त्री व पुरूष - वर्ग हैं. दो इन्द्रियाँ - नेत्र व कर्ण - दो दो हैं. लोक दो कहे गए हैं - स्वर्ग और नरक. दो कर्म करने वाले आदरणीय हैं - जरा भी कठोर ना बोलने वाले और दुष्ट पुरूषों का आदर ना करने वाले. अकर्मण्य गृहस्थ और कर्मों में लिप्त सन्यासी दो विशेष प्रकार के अधम पुरूष हैं. दूसरे के कान में कहते ही गुप्त वार्ता नष्ट हो जाती है. दैवी और आसुरी वृत्ति वाले दो प्रकार के प्राणी संसार में पाये जाते हैं.

३

मनुष्य की तीन प्रवृत्तियाँ हैं - सात्त्विक, राजसिक और तामसिक. भगवान् शकंर के तीन नेत्र हैं. तीन ही देव हैं - ब्रह्मा, विष्णु और महेश. ब्रह्म, सत्, चित्त और आनन्द, तीन भागों में प्रकाशमान है . कार्य सिद्धि के तीन उपाय हैं - उत्तम, मध्यम और अधम. तीन कांड हैं - कर्मकाण्ड, ज्ञानकांड और उपासनाकांड. नरक के तीन द्वार है - वासना (कामनाओं व इच्छाओं का निर्बाध सन्तुष्टिकरण), क्रोध और लोभ, जिनसे आत्मा का पतन होता है (गीता १६.२१) तीन प्रकार के मनुष्य होते हैं. जो उत्तम होते है वे सबका कल्याण चाहने वाले, कोमल, सत्यवादी, जितेन्द्रिय, अन्नदान करने वाले, स्वाध्यायी, तपी, संयमी, व सदाचारी होते हैं.

ध्यान तीन प्रकार का कहा गया है - स्थूल, सूक्ष्म और ज्योतिध्यान.

४ युग चार हैं, सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि. ईश्वर का एक चतुर्भुज रूप है. ब्रह्मा के चार मुख हैं. वेद चार हैं, ऋग, यर्जु, साम और अथर्व. उपवेद भी चार है, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गन्धर्व वेद और शिल्पादिवेद. इन सब के और भी भेद हैं. काल चार हैं - प्रातः, दिवस, संध्या और रात्रि. वर्ण चार हैं - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र. प्रलय भी चार - नैमेत्तिक, प्राकृतिक, आात्यन्तिक और नित्य - हैं.

धनुर्वेद के चार प्रकार	मुक्त, अमुक्त, मुक्तामुक्त व मन्त्रमुक्त
धनुर्वेद के चार भेद	शस्त्र, अस्त्र, प्रत्यस्त्र व परमास्त्र
धनुर्वेद की चार क्रियाएँ	आदान, संधान, विमोक्ष और संहार
धनुर्वेद के चार चरण	दीक्षा, शिक्षा, आत्मरक्षा और इसका साधन
धनुर्वेद के दस अगं	व्रत, प्राप्ति, धृति, पुष्टि आदि .. आगे देखिए

चार - धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष में से एक वस्तु भी ना होने पर जीवन व्यर्थ है. प्रमाण चार हैं - प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और आगम. बुद्धि के चार - संशय, निश्चय, गर्व और स्मरण - गुण हैं. चार के साथ कभी सलाह न करें - अल्पबुद्धि, दीर्घसूत्री, जल्दबाज और चाटुकार. चार लोग सदा घर में रहने योग्य हैं - अपने कुटुम्ब का वृद्ध, उच्चकुल का संकटग्रस्त मनुष्य, धनहीन मित्र, और संतानहीन बहिन. चार चीजें तत्काल फल देती हैं - देवताओं का संकल्प, बुद्धिमानों का प्रभाव, विद्वानों की नम्रता व पापियों का विनाश. राजा चार चीजों से प्रजा को संतुष्ट रखता है - नेत्र, मन, वाणी व कर्म. वाणी की चार विशेषताएँ हैं - बोलने से ना बोलना अच्छा, बोलना ही पड़े तो सत्य बोलना, अच्छा (प्रिय लगने वाला) बोलना, और धर्मसम्मत वचन बोलना. सज्जनों के घर चार चीजें कभी खत्म नहीं होती - अतिथि के लिए आसन, पृथ्वी, जल व मीठी वाणी. चार चीजों के होने पर हर्ष या खत्म होने पर शोक नहीं करना चाहिए - सुख-दुःख, उत्पत्ति-विनाश, लाभ-हानि, जीवन-मरण. भोजन के चार प्रकार हैं - भक्ष्य (रोटी भात आदि चबा कर खाने वाले), भोज्य (दूध आदि निगलने वाले), लेह्य (चाट कर खाने वाले जैसे चटनी, शहद, रबड़ी आदि) और चोक्ष्य (चूस कर खाने वाले, जैसे ईख आदि). चार प्रकार के मनुष्य ईश्वर की शरण में जाते हैं दुःखी, जिज्ञासु, धनातुर, और ज्ञानी (गीता ७.१६). अन्तःकरण चार हैं, मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार. चार प्रकार के योग

उज्जायी, सीत्कारी, शीतली, भस्त्रा, भ्रामरी, मूर्छा और प्लाविनी), मुद्रा और नादासुन्धान. मुक्ति के चार साधन हैं विवेक, वैराग्य, षट्सम्पत्ति (शम, दम, तितिक्षा, उपरति, श्रद्धा, और समाधान) और मुमुक्षुत्व. आत्मा की चार अवस्थाऐं हैं - जागर, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय. आत्मा के चार स्वरूप हैं - स्थूल, सूक्ष्म, बीज और साक्षी. आत्मा की चार कलाऐं है - निवृत्ति, प्रतिष्ठा, विद्या और शान्ति.

५

हाथ की पाँच उंगलियाँ हैं व पाँच ही कर्मेन्द्रियाँ, पांच ज्ञानेन्द्रियाँ और पांच ही प्राण हैं. पाँच महाभूत हैं - पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश. पांडव पांच थे. महाद्वीप पांच हैं. पांच तिर्यक गतियां हैं - सरीसृप, वानर, पशु, मृग और पक्षी. उपाय पांच हैं - साम, दाम, दंड, भेद और उपेक्षा. कलियुग पांच चीजों में निवास करता है - असत्य, मदा, कामना, क्रूरता और स्वर्ण जिसमें पहले कही चार चीजों का निवास है. विद्या, शूरवीरता, दक्षता, बल और धैर्य - यह पांच मनुष्य के स्वाभाविक मित्र हैं. माता, पिता, अग्नि, गुरू और आत्मा - इन पांच का सम्मान करने वाला ही मुक्त है. देवता, पितर, मनुष्य, सन्यासी व अतिथि, इन पांच की पूजा करने वाला यश प्राप्त करता है. बल पंच प्रकार के हैं, बाहुबल, श्रेष्ठ मन्त्री का मिलना, धन लाभ, कुटुम्ब लाभ (अभिजात) व सबसे श्रेष्ठ बुद्धि बल. मनुष्य के गर्भ में रहते-रहते ही पांच - आयु, कर्म, धन, विद्या व मरण निश्चित हो जाता है. मंत्र अनुष्ठान के पांच अंग हैं - जप, होम, तर्पण, अभिषेक और ब्राह्मण भोजन. गृहस्थ के लिए पांच महायज्ञ बताऐ गये हैं - ब्रह्म-यज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ, पितृयज्ञ, और मनुष्ययज्ञ. मनुस्मृति (३.७१) में कहा गया है कि जो मनुष्य पञ्चयज्ञ के द्वारा देवता, अतिथि, पोष्यवर्ग, पितृलोक व आत्मा, इन ५ को अन्नादि नहीं देते, वे जीवित ही मृत के समान हैं.

कार्तिकेय के छह मुख कहे गए हैं. ऋतुऐं छह हैं -- ग्रीष्म,

शिक्षा, व्याकरण, कल्प, ज्योतिष, छन्द व निरूक्त. शक्तियां छह कही गई हैं -- पराशक्ति, ज्ञानशक्ति, इच्छाशक्ति, क्रियाशक्ति व मातृकाशक्ति. पाप छह हैं -- अपनी प्रशंसा करना, लोलुपता, तनिक से अपमान को भी ना सहना, निरन्तर क्रोध करना, चंचलता व अपने आश्रित की रक्षा ना करना. त्याग छह हैं -- धन पाकर खुश ना होना, दान करना, परोपकार में धन खर्च करना, वैराग्य, अप्रिय घटना घटने पर दुःखी ना होना, याचना ना करना. राजनीति के छह गुण हैं -- सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव व समाश्रय. राजनीति के इन छह गुणों को ना जानने वाला गुप्त मंत्रणा का अधिकारी नहीं होता. छह प्रकार के अधम पुरूष हैं -- क्लेशप्रद कर्म करने वाले, अत्यन्त प्रमादी, असत्य भाषण करने वाले, अस्थिर चित वाले, स्नेह रहित व अपने को चतुर मानने वाले. सत्य, दान, कर्मण्यता, अनुसूया, क्षमा व धैर्य -- इन छह गुणों का कभी त्याग ना करें. काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद व मात्सर्य -- यह छह शत्रु मन में रहते हैं. छह प्रकार के मनुष्य छह से अपनी जीविका चलाते हैं -- चोर असावधान से, वैद्य रोगी से, ठग मूर्खों से, पुरोहित यजमानों से, राजा झगड़ने वालों से व विद्वान मूर्खों से. छह प्रकार के मनुष्य अपने पूर्व उपकारी का सम्मान नहीं करते -- विद्या समाप्त होने पर शिष्य आचार्य का, विवाहित बेटे माता का, पति पत्नि. का, कृतकार्य मनुष्य सहायकों का, रोगी रोगमुक्त होने पर वैद्य का तथा नदी पार होने पर यात्री नाव का. यदि पृथ्वी भर पर शासन करना हो तो छह वेगों का सदा दमन करो -- वाणी का वेग, मन का वेग, उदर का, उपस्थ का और जिव्हा का. भक्ति प्राप्त करनी हो तो छह बातों का त्याग करो -- अधिक आहार, व्यर्थ कार्य, व्यर्थ बोलना, भजन के नियम का त्याग, विषयी जनों का संग, और विषय लालसा. भक्ति का रत्न पाने के लिए छह बातों को ग्रहण करो --- भजन में उत्साह, दृढ़ निश्चय, धैर्य, भजन में प्रवृत्ति, बुरे संग का त्याग और साधु के आचरण.

पुष्कर, का वर्णन है. समुद्र, लोक और पाताल भी सात-सात हैं. मनु सात हैं -- क्योंकि यह सातवां, वैवस्वत मन्वन्तर है. इसके पूर्व स्वायम्भुव, स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, व चाक्षुश यह छह मन्वन्तर हो चुके हैं. सात बातें लक्ष्मी-वृद्धि में सहायक होती हैं -- धैर्य, मनोनिग्रह, संयम, पवित्रता, दया, कोमल वाणी व मित्र-द्रोह ना करना. सात चीजों के विनाश पर कभी शोक ना करें -- कर्कशा नारी, निखट्टू पति, गरियार बैल, अड़ियल टट्टू, मदिरा-पान कराने वाला ब्राह्मण, कपूत व अन्यायी राजा. सात चीजों का त्याग उत्तम है -- अत्यंत दयालु राजा, सर्वभक्षी ब्राह्मण, कुटिल सहायक, उद्दण्ड सेवक, कृतघ्न, हिलता हुआ दांत व स्वतंत्र स्त्री. सात व्यक्ति अनायास ही काबू किये जा सकते हैं -- लोभी, आलसी व मूर्ख, प्रमादी, डरपोक व वीरों का अनादर करने वाला, क्रूर, झूठा, चंचल चित्तवाला. व्यसन सात हैं -- मद्यपान, शिकार, जुआ, धन का अपव्यय, वचन, दण्ड में कठोरता, व चित्त का चंचल होना. परन्तु यज्ञ, विवाह, विपत्ति, शत्रुनाश, कीर्तिदायक कर्म, मित्र-संग्रह, प्रिय-स्त्री, गरीब व बन्धु-वान्धवों को देने में खर्च किया धन अपव्यय नहीं कहलाता. शौर्य, दृढ़ संकल्प, दक्षता, युद्ध में डटे रहना, दान देना व शासन करना, ये सात क्षत्रियों के स्वाभाविक कर्म हैं (गीता १८.४३). ज्ञान योग की सात भूमिकाएँ हैं -- शुभेच्छा, सुविचार, तनुमानसी, सत्वापत्ति, असंसक्ति, पदार्थभावनी और तुरीय. मन्त्रसिद्धि के सात उपाय हैं -- भ्रामण, रोधन, वश्य, पीड़न, पोषण, शोषण और दाहन.

८ सिद्धियां आठ हैं, रसोल्लास, तृप्ति, उत्तम धर्म, समरूप और समआयु, विशोका, तत्परता, सर्वगमन व सवर्त्र-विचरण. पातंजलियोगसूत्र (३:४४) के अनुसार आठ अन्य (महा)सिद्धियां बताई गई हैं, अणिमा, लघिमा, महिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य (अर्थात सब प्रकार की इच्छाओं का पूर्ण हो जाना), वशित्व, ईशित्व (सृष्टि उत्पन्न करने की शक्ति) और यन्त्रकामवसायित्व.

स्वस्तिकासन और सिंहासन मुख्य है) प्राणायाम (९ प्रकार के हैं अनुलोम-विलोम, सूर्यभेदी, उज्जयी, सीत्कारी, शीतली, भस्त्रा या भस्त्रिका, भ्रामरी, मूर्छा और प्लाविनि. विषेश प्राणायामों को मुद्रा कहते हैं, जो महामुद्रा, महाबन्ध, महावेध, विपरीतकरणी, तड़न, परिधान युक्ति परिचालन, शक्तिचालन, खेचरी और वज्रोली के नाम से जानी जाती हैं) और चार अन्तर्जगत् के अर्थात प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि. वसु आठ हैं, आप, ध्रुव, सोम, धर्म, अनिल (वायु), अनल (अग्नि), प्रत्यूष और प्रभास. विवाह आठ प्रकार के हैं, ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापात्य, आसुर, गन्धर्व, राक्षस, सर्प, विद्याधर व पिशाच. दूत के आठ गुण हैं, अहंकार रहित होना, कायरता शून्य होना, शीघ्र ही कार्य पूरा करना, दयालू, शुद्धहृदय, दूसरों के बहकावे में ना आने वाला, नीरोग व उदार वचन वाला. हरितत्त्वदीधिति में मन्त्र के आठ दोष गिनाए गए हैं, अभक्ति, अक्षरभ्रान्ति, लुप्त, छिन्न, ह्रस्व, दीर्घ, कथन और स्वप्नकथन. पाश आठ हैं, घृणा, लज्जा, भय, शंका, जुगुप्सा, कुल, शील और जाति. जो इनसे मुक्त है, वही सदाशिव है. आठ ही दैत्यवंश हैं -- उदायुध (८६ प्रकार के. इन्हें घृणा भी कहा जाता है), कम्बु (या लज्जा, ८४ प्रकार), कोटिवीर्य (भय, ५० प्रकार), धौम्र (शंका, १०० प्रकार), कालक (जुगुप्सा), दौर्हृद (दुर्हृद्नामक असुर का वंशधर, अभिमान), मौर्य (मुर नाम के असुर की सन्तान, शील संज्ञक पाश), और अन्तिम असुर वंश कालकेय (कालक नामक असुर की सन्तान, जाति नामक पाश). मातृसाक्षात्कार हुए बिना इन अष्टपाषों का नाश नहीं होता.

९ नौ से किसी भी संख्या को गुणा करने पर यह उसे अपने में लीन कर लेता है. जैसे ९ X ३ = २७ = २ + ७ = ९. नौ ही निधियाँ हैं, नौ ही रत्न और पुराणों के अनुसार नौ ही ग्रह. महान् अकबर के दरबार में नौ ही रत्न थे. काव्य के नौ रस हैं - शान्त, रौद्र, वीर, वीभत्स, वात्सल्य, करूण, अद्भुत, शृंगार व हास्य. विष्णु-पुराण के अनुसार नौ ब्रह्मा हैं, भृगु, पुलस्तय,

धन, व विश्वदेव. नौ अपने स्थान से गिर कर अच्छे नहीं लगते, राजा, कुलवन्ती नारी, मनुष्य, ब्राह्मण, मंत्री, मेघ, दांत, केश व धर्म. शम, दम, तप, शौच, सहिष्णुता, सत्यवादिता, ज्ञान, विवेक तथा आस्तिक भाव, ब्राह्मण के ये नौ स्वाभाविक कर्म हैं (गीता १८.४२). भक्ति नौ प्रकार की होती है श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदनरूप. इसे नवधा भक्ति भी कहते हैं.

१० रावण के दस मुख विख्यात हैं. उत्तम सद्कार्यों के दिखाई देने वाले दस ही लाभ हैं. बल, रूप, मधुर स्वर, उज्ज्वल वर्ण, कोमलता, सुगन्ध, पवित्रता, शोभा, सुकुमारता, व सुन्दर पत्नि. दस दिशाएं हैं. कूर्म्र, क्रच्छप, मत्सय, वराह आदि दस अवतार हैं. शरीर के दस द्वार हैं, जिन्हें भेदने पर परमात्मा से मिलन होता है. दस प्रकार के मनुष्य धर्म के तत्त्व को नहीं जानते, नशे में मतवाला, असावधान, पागल, थका हुआ, क्रोधी, भूखा, जल्दबाज, लोभी, भयभीत, और आसक्त. स्वर्ग के दस हेतू हैं, सत्य, विनय मुद्रा, शास्त्रज्ञान, विद्या, कुलीनता, शील, बल, धन, शूरता, व बुद्धि-चातुर्य. धनुर्वेद (कृपया चार अंक भी देखें) के दस अगं इस प्रकार हैं, व्रत, प्राप्ति, धृति, पुष्टि, स्मृति, क्षेप, शत्रु-भेदन, चिकित्सा, उद्दीपन व कृष्टि. भागवत-महापुराण के अनुसार दस महाविद्याएं हैं, महाकाली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, बगला, धूमावती, (त्रिपुर)भैरवी, मातंगी व कमला. भोजकृत "युक्तिकल्पतरू"' के अनुसार भारतीय नौकाओं के दस भेद होते थे, क्षुद्रा, मध्यमा, भीमा, चपला, पटला, दीर्घा, पत्रपुटा, गर्भरा, व मन्थरा. प्रेम-मग्न पुरूषों के दस लक्षण बताऐ गये हैं, सर्द आहें भरना, रंग जर्द (पीला) पड़ जाना, आंखें नम रहना, बेकरारी, इन्तजार में रहना, बेसब्र रहना, कुछ का कुछ नजर आना, कम बातचीत करना, नींद का उड़ जाना और चारों ओर अपने महबूब को ही देखना. चिन्ता, जागरण, उद्वेग, कृशता, मलिनता, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, मोह और मृत्यु, ये दस विरह की

विद्वान पुरूष सर्वदा एक (बुद्धि) से दो (कर्तव्य-अकर्तव्य) का निश्चय करके चार (साम, दाम, दण्ड, भेद) से तीन (शत्रु, मित्र या उदासीन) को वश में रखते हैं. पांच (इन्द्रियों) को जीत कर छह (सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव व समाश्रयरूप) गुणों को जान कर और सात (परस्त्री, जुआ, मृगया, मद्य, कठोर वचन, कठोर दण्ड व अन्याय से धर्नोपार्जन) को छोड़ कर ही सुखी हुआ जा सकता है. जो पुरूष नौ (आँख, कान, नाक आदि) दरवाजों वाले, तीन (सत्त्वगुण, रजोगुण व तमोगुण रूपी) खंबों वाले, पांच (ज्ञानेन्द्रिय रूपी) साक्षी वाले आत्मा के निवास स्थान इस शरीर रूपी गृह को जानता है, वह बहुत बड़ा ज्ञानी है.

संकलन-कर्त्ता

राजीव कुमार भटनागर

Compiled by Rajiv Kumar Bhatnagar

rajiv@gita-society.com

मूल संस्करण मार्च १९९०

हिन्दी टंकण और विस्तारादि अप्रैल २००२

Hindi typing, revision and enlargement April 2002

शबाने-हिज्राँ दराज़ चूँ ज़ुल्फ़ व रोज़े वसलत चूँ उम्र कोताह
सखी पिया को जो मैं न देखूँ तो कैसे काटूँ अँधेरी रतियाँ
यकायक अज़ दिल दो चश्में जादू बसद फरेहम बेबुर्द तसकीं
किसे पड़ी है जो जा सुनावे पिआरे पी को हमारी बतियाँ
चुं शमआः सोजाँ चुं जर्रः हैराँ हमेशः गिरियाँ बइश्क आँ मेह
न नींद नैना, न अंग चैना, न आप आवें न भेजें पतियाँ
बहक्क रोज़े वसाल दिलबर कि दाद मारा फरेब खुसरू
न पीत मनकी दुराए राखूँ जो जाने पाऊँ पियाकी घतियाँ

(इस गरीब की दशा को मत भुलाओ. ऐ प्यारे अब विरह नहीं सह सकती. तेरे बालों के समान विरह की रातें बड़ी और अवस्था के समान मिलने के दिन छोटे हैं. यकायक इन दोनों जादू भरी आँखों ने सैकड़ों बहाने से मेरे धैर्य को छुड़ा दिया. उस प्यारे के प्रेम में दीप की तरह जलती हुई मैं उस जर्रे की तरह, जो सूर्य की किरणों मे चमकते और घूमते फिरते दिखते हैं, घबराई हुई और रोती हुई हूँ. ऐ खुसरो, प्यारे से मिलने के दिन मुझे धोखा दिया गया)